त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी

संयोजक

सप्तऋषि आश्रम
का
इतिहास तथा महात्म्य

भारत रत्न महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी

संस्थापक

(वेद, शास्त्र, पुराण निबन्ध आदि धर्म-ग्रन्थों से प्रमाणित)

तथा

आश्रम में सम्प्रति उपलब्ध सुविधाएं

लेखक

श्री पंडित रघुनाथ दत्त बन्धु

शास्त्री, निरुक्त रत्न, विद्यालंकार

मंत्री विद्वत्परिषद् श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब

द्वितीय संस्करण – 2022

प्रकाशक

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब

भूपेन्द्र भवन, पहाड़गंज, नई दिल्ली

दूरभाष: 9820694600, 7977193471, E-mail: sdprsabha@gmail.com

सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार

दूरभाष: 7217013573, 7217013571, 7217013572, E-mail: saptrishiashram170@gmail.com

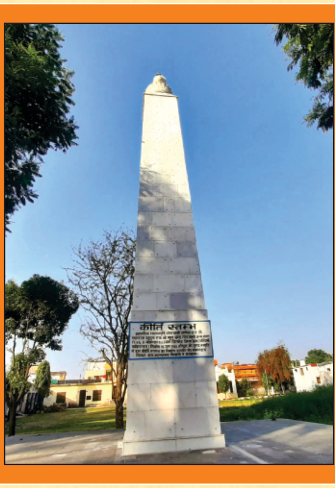

त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त महाराज जी
का कीर्ति स्तम्भ

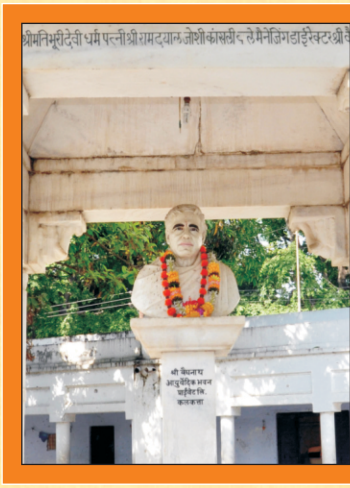

त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त महाराज जी
का प्रतिमा

आश्रम का एक दृश्य

101 वर्ष के लिए अखण्ड
अग्नि प्रज्वलित यज्ञशाला

गोस्वामी गणशदत्त घाट का एक दृश्य

भूमिका

पुराणों में लिखे अन्य कई तीर्थों की तरह हरिद्वार का सप्तऋषि आश्रम भी विस्मृति की गोद में लुप्त-सा हो गया था, यद्यपि हरिद्वार के आस-पास के वयोवृद्धों की श्रवण परंपरा से कुछ लोग इसे "सप्तसरोवर" तो कहते थे, तथापि इसके इतिहास से परिचय न होने के कारण बहुत-से लोग इसके महत्व को नहीं जानते थे। यह देख सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रधान मंत्री स्वर्गीय गोस्वामी गणेशदत्त जी महाराज ने "सप्तसरोवर" के विषय में शास्त्रीय अन्वेषण कराया और जब शास्त्रीय प्रमाणों तथा पुराणों में यह निर्णय हो गया कि यही प्राचीन सप्तऋषि आश्रम का स्थान है, तब उन्होंने इस लुप्त तीर्थ के पुनरुद्धार करने का निश्चय कर सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा से इस लुप्त तीर्थ के उद्धार करने का प्रस्ताव पास कराया। फिर बड़ी खोज से इस तीर्थ का इतिहास महात्म्य लिखा गया और उसी के अनुसार शास्त्रीय आधार पर इसका निर्माण कार्य "सप्तसरोवर" गंगा तट पर प्रारंभ हुआ। प्रतिनिधि सभा के इस पर लाखों रुपये लगे। निर्माण कार्य संपन्न हो जाने पर भारत के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम स्वर्गीय डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी ने इस आश्रम का उद्‌घाटन किया। आज वह सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार का दर्शनीय तीर्थ माना जाता है। यह हर की पौड़ी से भी बहुत दूर नहीं है, अत: हरिद्वार जाने वाले यात्रियों को इस तीर्थ पर अवश्य जाना चाहिये। इस तीर्थ पर स्नान, तर्पण तथा मंदिर दर्शन को शास्त्र ने बहुत पुण्यप्रद कहा है।

हरिद्वार से सप्तऋषि आश्रम पर जाने के दो मार्ग है। एक खड़खड़ी से कमलदास की कुटिया के सामने अन्दर का रास्ता और दूसरा ऋषिकेश रोड। दोनों पर अपनी कार से जा सकते हैं। बस और आटो रिक्शा भी निरन्तर चलते हैं। ऋषिकेश रोड से जाएं तो उसके तीसरे मील के समीप सड़क पर सप्तऋषि आश्रम की गोशाला का मुख्य द्वार है। इस द्वार के साथ आश्रम के अन्दर जाने की सड़क है। इस पर चलकर **श्री गंगाजी के तट पर 40 बीघा भूमि पर बना यह आश्रम** बड़ा विशाल तथा रमणीय है। दूसरा मार्ग जो खड़खड़ी से "सप्तसरोवर" को जाता है उससे जाते जहां बांध समाप्त होता है, वहीं सप्तऋषि आश्रम का सप्तगंगद्वार है। इस सप्तगंगद्वार से आश्रम में आए यात्री गंगा तट के आनन्द घाट पर स्नान करने जाते

है। सप्तगंगद्वार से आश्रम में प्रवेश करते ही एक ओर सप्तऋषि आश्रम का संस्कृत महाविद्यालय, तथा दूसरी और छात्रालय दिखाई देते हैं। इसी मार्ग पर निकट ही आश्रम के जीर्णोद्धारक सनातन धर्म के मान्य नेता स्वर्गीय त्यागमूर्ति श्री गो. गणेशदत्तजी महाराज का कीर्तिस्तम्भ तथा सामने संगमरमर की विशाल मूर्ति है।

इस मन्दिर मार्ग पर आगे चलते हुए बाई ओर अन्नक्षेत्र व अन्नपूर्णा भण्डार है, दाईं ओर विघ्नहर्त्ता श्री गणेश जी का मन्दिर है। आगे बाईं ओर यज्ञशाला है जहाँ 1954 में वेद मंत्रों द्वारा अग्नि प्रचण्ड की गई थी, जो 101 वर्ष तक लगातार जलने के संकल्प से जलाई गई थी। इसमें विधिपूर्वक आहुतियां डालकर यज्ञ करके श्रद्धालु मनवांछित फल पाते हैं। यज्ञशाला के आगे बाई ओर एक शृंखला में श्री राधाकृष्ण, हनुमान जी, भगवती दुर्गा के मन्दिर हैं। जिनका निर्माण सूरीनाम, साऊथ अमेरिका निवासी एक भारतीय ब्रह्मनिष्ठ तथा परम भक्त श्री जगदेव पराग मिश्र जी ने करवाया।

इस मन्दिर मार्ग पर आगे चलकर पहले शिवकुण्ड नाम का एक छोटा सरोवर है और उसी के तट पर गंगेश्वर महादेव का प्रधान मंदिर है। इस मन्दिर की परिक्रमा में ही सप्तऋषियों की मूर्तियां स्थापित हैं, जिनके नाम है अत्रि, कश्यप, गौतम, जमदग्नि, भारद्वाज, वशिष्ठ व विश्वामित्र- इन सात ऋषियों तथा अरुन्धती और श्री गंगा जी के मिलाकर छोटे-छोटे नौ मंदिर हैं।

प्रधान मंदिर की दांई ओर श्री रामदरबार मन्दिर तिरुपति बाला जी मन्दिर तथा महामना मालवीय जी की पुरुष प्रमाण मूर्ति है। इसके सामने ही सरस्वती मन्दिर और पीछे एक विशाल रामतीर्थ सत्संग भवन है। इन मन्दिरों के चारों तरफ, तीर्थयात्रियों, साधु-महात्मा, सद्गृहस्थ आदि के भजन-पाठ-योगाभ्यास तथा स्वाध्याय के लिये सप्तऋषि तथा अन्य ऋषियों तथा उनकी पत्नियों के नाम पर तथा अन्य कुल मिलाकर 45 कुटिया बनी हैं। इनमें रहने के साथ ही रसोईघर-स्नानगृह की भी व्यवस्था है। ये चारों तरफ से खुली हैं और हर एक के दायें-बायें पार्क हैं। मंदिर में प्रात:सायं दोनों समय विधि-विधान से पूजन होता है। यज्ञशाला में नित्य हवन किया जाता है। सत्संग भवन में भजन, कीर्तन, कथा तथा व्याख्यान होते रहते हैं। विद्यालय में छात्र संस्कृत शिक्षा प्राप्त करते हैं। अन्नक्षेत्र (लंगर) में साधु-महात्मा, अभ्यागत तथा छात्र भोजन पाते हैं।

फरवरी 2022 में सप्तऋषि आश्रम में डॉ. शिवकुमार स्मृति प्राकृतिक चिकित्सालय भी आरम्भ किया गया है, जहां प्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. वेद प्रकाश की देखभाल में प्राकृतिक चिकित्सा विधि से उपचार किया जाता है।

गंगा की ओर आश्रम के द्वार से बाहर निकलते ही बांध के पार गंगा तट पर आश्रम के निर्माता उस महान विभूति त्यागमूर्ति श्री गोस्वामी गणेशदत्त जी महाराज की समाधि है, जो न केवल देश तथा हिन्दू जाति के एक महान नेता थे, वरन अपनी कठोर तपस्या, त्याग तथा जनताजनार्दन की निष्काम सेवा के कारण उनको बहुत ऋद्धि-सिद्धियां प्राप्त थीं, जिनके बल पर उन्होंने लाखों रुपया राजा-महाराजाओं तथा धनाढ्य लोगों से एकत्र करके दरिद्रनारायण की सहायता तथा अन्य लोक सेवा के कार्यों पर खर्च किये। उनके श्रद्धालु भक्त अपनी दुख-निवृत्ति तथा मनोकामना की पूर्ति के लिये आज भी उनकी पवित्र आत्मा से प्रेरणा लेते हैं। प्रत्येक वर्ष उनकी पुण्य तिथि पर 10 जून को एकत्र हो उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। गोस्वामी जी के भारत रत्न पं. मदनमोहन मालवीय जी के जन्मदिन 25 दिसम्बर पर भी सनानतन धर्म प्रतिनिधि सभा के सदस्यगण और श्रद्धालु सप्तऋषि आश्रम में एकत्र हो उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

सम्प्रति : पिछले वर्षों में गौशाला वाली सड़क पर सप्तऋषि का विशाल भव्य द्वारा निर्मित किया गया है। उसमें प्रवेश करती ही बाईं ओर प्राकृतिक चिकित्सालय का सुन्दर परिसर है और सामने श्री महादेव शिवजी की भव्य विशाल प्रतिमा के दर्शन होते हैं। इस ओर से आगे आकर दाईं ओर मन्दिरों की श्रंखला है। जिन का वर्णन ऊपर किया गया है। मन्दिरों के सामने नवनिर्मित कार्यालय स्थित है।

सप्तऋषि आश्रम

धर्मशास्त्र में लिखा है कि जैसे शरीर के अवययों में दायां हाथ बाएं की अपेक्षा अधिक पवित्र माना जाता है, ठीक वैसे ही पृथ्वी-पृथ्वी सब एक होने पर भी कोई-कोई भू-भाग अपनी भूमि की अद्‌भुत शक्ति, जल व तापमान की विशेषता अथवा मननशील तपस्वियों की तपस्या के कारण तीर्थ बन जाया करता[1] है। वहां जप, तप, पूजा, पाठ, दान, पुण्य करने का फल अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक होता है और उन तीर्थों पर जाने वाले विश्वासियों के मन व बुद्धि स्थिरता तथा शांति लाभ करते हैं। यहीं सब ध्यान में रखकर लोक कल्याण की कामना के उद्देश्य से कश्यप, गौतम, अत्रि, जमदग्नि, विश्वामित्र तथा अपनी धर्मपत्नी अरुधन्ती के साथ वशिष्ठ आदि सातों ऋषि[2] श्री गंगा जी के पृथ्वी पर प्रवाहित होने से पूर्व तीर्थों की खोज में निकलें[3]। आज जिस गंगा-द्वार[4] को हरिद्वार[5] या हरद्वार कहते हैं, वहां से दो कोस[6] की दूसरी पर उत्तर दिशा की ओर घूमते-घूमते अरुधन्ती को वृक्षों के झुरमुट में एक अलौकिक शिवविग्रह मिला[7]। अत: उस दिव्य शक्ति संपन्न शिवलिंग की उपासना करने के लिये से सातों ऋषि वहीं आश्रम बनाकर रहने[8] लगे ।

---

(1) भौमानामपि तीर्थानां पुण्यत्वे कारणशृणु,
यथाशरीरस्योद्देशा: केचिन्मेध्यतरा: स्मृता:
तथा पृथिव्या उद्देशा: केचितपुण्यतमा: स्मृता:
प्रभावाददद्‌भ ताद्‌भ्मे: सलिलस्य च तेजसा,
परिगृहान्मुनीनौं च तीर्थानां पुण्यता स्मता। बी.मि.ती.प्र. 10

(2) भागवत्स्क 8 अ. 13, 5। (3) स्कं प्र. 129, 139। (4)महाभारत भारत आ. अ. 103, 1। (5) पदम् प्र.उ. खं. 22/25। (6) तीर्थ प्र. 11/59। (7) स्.प्र. 129/40 44, 45। (8)स्क. प्र. 129/44 पृ. नारर पु. 66/33।

सप्तऋषियों का महत्व

ये सातों ही ऋषि मंत्रद्रष्टा है।[9] मंत्रद्रष्टाओं में इनका स्थान बहुत ऊंचा है, क्योंकि ये धर्म के साक्षात्कारकर्त्ता[10] होने के अतिरिक्त मानव जाति के प्रधान गोत्र कारक आठ ऋषियों में से पहले सात गिने जाते हैं।[11] इनका गौरव इससे अधिक और क्या हो कि ऋग्वेद ने इन्हें मानव जाति का पिता कहकर सम्मानित किया है।[12] अथर्ववेद में आया है, कि संसार में जो कुछ शांतिदायक है, उसे सप्तऋषि जानते[13] है।

सप्तऋषि आश्रम में सप्तस्रोत के प्रमाण

महाभारत में लिखा है कि धृतराष्ट्र, गान्धारी, कुन्ती, संजय आदि कुछ लोग संसार से विरक्त हो, सदा के लिए हस्तिनापुर छोड़, कुछ दिन वैराग्य उत्पन्न होने के कारण कुरुक्षेत्र में रहे। तदनन्तर वे सभी वहां से हरिद्वार के समीप किसी वन में तपस्या करने जा बैठे।[14] अब प्रश्न यह है कि हरिद्वार का वह कौन-सा पवित्र वन था, जहां वे शांति पाने के लिए तपस्या करने लगे। इसका उत्तर श्रीमद्‌भागवत्‌ में इस प्रकार दिया गया है कि धृतराष्ट्र अपने भाई विदुर तथा धर्मपत्नी गान्धारी के साथ हिमालय से दक्षिण की ओर ऋषियों के आश्रम में तपस्या करने वहां गए, जहां सप्तऋषियों की प्रसन्नता के लिए गंगा सात धाराओं में होकर बहने लगी थी।[15]

---

(9) वायु पु. प्र. 61/191। (10) वही। (11) निर्णय सिन्धु 3 में बौधायन। (12) ऋग्वेद 4/42/8। (13) अथर्व 19/9/13। (14) महाभारत स्वर्ग प. अ. 4/10, 11। (15) भागवत 1/13/50,51।

इसलिए उस स्थान का नाम सप्तस्रोत पड़ गया। बृहन्नारदीय पुराण में कहा गया है कि जहां गंगा सप्तऋषियों की प्रसन्नता के लिए सात धाराओं में बहने लगी थी, उसे सप्तगंग तीर्थ भी कहते हैं। वहां गंगा के सात धाराओं में होकर बहने का कारण वृहद्धर्म पुराण[16] में इस प्रकार बतलाया गया है कि श्री गंगा जी ने हरिद्वार के समीप[17] सप्तऋषियों को देखा कि उन्होंने उसे (गंगा जी को) आते देख मारे खुशी के अपने अपने शंख बजाने आरंभ कर दिये है। तब उन सप्तऋषियों की प्रसन्नता के लिए गंगा वहां सात धाराओं में होकर बहने लगी। इस घटना का वर्णन नन्दीश्वर पुराण का प्रमाण देकर तीर्थ प्रदीप में इस प्रकार किया गया है।

सप्त-स्रोत तीर्थ का इतिहास तथा महात्म्य

श्री महादेव उवाच-

स्वर्गद्वारं यदा प्राप्तस्तवाऽभूत् कौतकं महत।
न शब्दं चा शृणोद्राजा गंगायास्तत्र पार्वति। 42।

श्री महादेव जी ने कहा, हे पार्वती! जब गंगा जी स्वर्गद्वार के पास पहुंची, तो एक बड़ी अद्‌भुत बात हुई। वहां राजा भागीरथ को गंगा के प्रवाह का शब्द सुनाई न दिया।42।

चिन्तयामास किं जातं, रुद्धा गंगा कथं पुनः[18]।
शब्दो नायाति गंगायाः प्रवाह संभवोऽधुना।43।

---

16) बृहन्नारदीय प्र. 66/42।

17) हरिद्वार समीपे तु ददर्श सप्त वै मुनीन् ।9।
ते तु सप्तैव मुनयः सत्पशंखध्वनि वधु।
सप्तधारा तथा भूता सप्तऋषिणां सुखाय वै। वृहद्धर्म पुक 52/10।

18) "कथं पुनः तथा वै पुन" यहां पुनः कहने का अभिप्राय यह है कि श्री गंगा जी स्वर्ग से उतरते ही पहले शिवजी जी जटाओं में रुकी और फिर जिह्नु ऋषि ने रोक ली थी। इसलिये कहा है कि क्या अब तीसरी बार फिर रुक गई - देखो मेरा गंगावतरण ।बन्धु।

वह सोचने लगा, यह क्या हुआ, इस समय गंगा के प्रवाह से उत्पन्न होने वाला शब्द नहीं हो रहा, गंगा जी फिर क्यों रुक गईं। 43।

परिवृत्य मुखं राजा, गंगा प्राह तपोधनः।

कि जातमधुना गंगे? कथं रुद्धासि वै पुनः ।44।

तपस्वी राजा भागीरथ ने पीछे की ओर मुख फेरकर श्री गंगा जी से कहा-भगवती गंगे! अब क्या हुआ? आप फिर क्यों रुक गई है।44।

अब्रवीच्च तथा गंगा, राजन्! पश्याऽऽश्रमानिमान्।
येषु वै निवसन्त्येते, महाभागास्तपस्विनः।45।
ऋषयो मन्त्र द्रष्टारः सप्तैते गोत्र कारछाः।
जमग्नि-भरद्वाजौ, विश्वामित्रोऽथ गोतमः।46।
अत्रि वें कश्यपश्चापि, वसिष्ठो-भार्यया सह।47।

तब गंगा जी ने कहा-राजन्। इन आश्रमों को देख, जिनमें महाभाग तपस्वी, मन्त्रद्रष्टा-जमदाग्नि, भारद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, अत्रि, कश्यप और अपनी धर्मपत्नी अरुधन्ती सहित वशिष्ठ-ये सात गोत्र प्रवर्तक ऋषि रहते है।45।46।47।

एते सर्वेऽभिवांच्छन्ति गंगा गच्छेण् ममाग्रतः।48।

इनमें से प्रत्येक चाहता है कि गंगा मेरे आश्रम के आगे से होकर जाये। 48।

आश्रमाः सप्तवर्तन्तेऽहं चेवैका सरिन्नृप!
पृष्ठतः कस्य गच्छेयं कस्य गच्छेयमग्रतः।49।

(परंतु) राजन्! मैं एक और आश्रम सात है। मै किसके पीछे जाऊं और किसके आगे से होकर निकलूं।49।

यस्याश्रमं परित्ज्य, गमिष्यामि तवानुगा।
स प्रदास्यति में शापं, भीता[19] तिष्ठामि शापतः।50।

---

(19) जहु ऋषि के आश्रम पर घटित घटना के कारण इन आश्रमों को देखकर भय हुआ। देखो मेरा गंगावतरण !बन्धुः!

तेरे पीछे चलती हुई जिसके आश्रम के पीछे से होकर जाऊंगी, वही मुझे शाप देगा। उसी शाप के भय से रुक गई हूं।50।

तदान्तरिक्षवाक् प्राह गंगा देवी सरिद्वराम्।

सप्तधा विभजात्मानं, सप्त स्रौतवती भव।51।

तब आकाशवाणी हुई और उसने नदियों में श्रेष्ठ देवी गंगा को कहा, (हे गंगे) तू अपने को सात धाराओं में विभक्त करके सात स्रोतों वाली हो जा।51।

श्रुत्वा तु वचनं गंगा, सप्त धारावती सति।

अवहत् सप्तर्षीणां सा, ह्याश्रमाग्रे सरिद्वरा।52।

आकाशवाणी को सुनकर, गंगा सात धाराओं में होती हुई उन सातों ऋषि-आश्रमों के आगे से होकर बह निकली।52।

एतद्विलोक्य वै सर्व, गंगायाः कार्य मुत्तमम्।

तुष्टास्ते ऋषयः सप्तः गंगातैश्चापि पूजिता।53।

ये सातों ऋषि गंगा जी के इस उत्तम कार्य को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने गंगाजी का पूजन किया।53।

तेषां तपः प्रभावेण, गंगायाश्च प्रसादतः।

तत्स्थानं तीर्थतां प्राप्तं सप्त स्रोतेति नामतः।54।

उन ऋषियों के तप, प्रभाव और गंगा जी के वरदान से वह स्थान तीर्थ बन गया और सप्तस्रोत नाम से प्रसिद्ध हुआ। 54।

सप्तस्रोतं च विख्यातं, सप्त ऋष्याश्रमं ततः।

तत्र स्नात्वा हि गंगायां पुनर्जन्म न विद्यते।55[20]।

(इस घटना के) अनन्तर वह सप्तऋषि आश्रम सप्तस्रोत नाम से प्रसिद्ध हुआ। वहां गंगा जी में स्नान करके फिर जन्म नहीं लेना पड़ता।55।

---

(20) तीर्थ प्रदीप पृ. 205 नन्दीश्वर पुराण अध्याय 11

पुण्यवं पापहं क्षेत्रं, सर्व-सिद्धि-प्रदायकम्।
ऋषि प्रसाद संभूतं, पापताप-विनाशकम्।56।

यह ऋषियों की कृपा से बना हुआ क्षेत्र पुण्य (फल सुख) देने वाला, पापों को मिटाने वाला, सभी मनोकामनाओं को सिद्ध करने वाला और पाप-जन्य दु:खों को दूर करने वाला है।56।

मम-वासः सदा तत्र, ऋषि स्थापित-विग्रहे।
मम दर्शन मात्रेण, भवन्ति संपदः गृहे।57।

ऋषियों की स्थापित उस पिण्डी में सदा निवास करता हूं और मेरे दर्शन मात्र से ही श्रद्धालु भक्तों के घर में सभी सम्पत्तियां हो जाती है।57।

शिव कुण्डे तथा स्नात्वा, दृष्टा मौं च महेश्वरम्।
श्रद्धावाल्लभते स्वर्ग, यानी मोक्षं न संशय: ।58।

शिव कुण्ड में स्नान करके मुझ महादेव के दर्शन से श्रद्धालु भक्त को स्वर्ग और ज्ञानी को मुक्ति प्राप्त होती है। इसमें जरा भी सन्देह न करना चाहिए।58।

गंगा द्वाराच्च गव्यूति स्वोत्तरस्यां दिशि प्रिये।
पावनं सिद्धिडं क्षेत्रं सप्त स्रोताभिधानकम्।59।

हे पार्वती। गंगाद्वार से दो कोस उत्तर की ओर यह सिद्धियों के देने वाला सप्तस्रोत नाम का पवित्र क्षेत्र है।59।

यहाँ के स्नान, तर्पण और दर्शन का फल

नारद पुराण में लिखा है कि सप्तगंग (सप्तस्रोत) समस्त पापों को नाश करने वाला तीर्थ है। यहां के इन पुण्यप्रद पवित्र आश्रमों के समीप बहने वाली समस्त धाराओं में पृथक्-पृथक् स्नान तथा तर्पण करने से मानव को उसी लोक की प्राप्ति होती हैं, जिसमें ऋषि जाते हैं।[21]

महाभारत में कहा गया है कि सप्तगंग (सप्तस्रोत) में स्नान तथा तर्पण करने से पुण्य लोकों की प्राप्ति होती हैं[22]।

स्कन्द पुराण में आया है कि गंगा जी की अधिष्ठात्री ने यहां गंगेश्वर महादेव की स्थापना की थी। उसके दर्शन से पाप तो दूर होते ही हैं, साथ अश्वमेध-यज्ञ करने का भी फल मिलता है।[23]

वास्तविक सत्य

देवता तथा तीर्थों की भक्ति का फल अपनी भावनाओं के अनुरूप हुआ करता है। जिसकी जितनी श्रद्धा-भक्ति अधिक होगी, उतना ही उसे शीघ्र तथा अधिक फल मिलेगा। परंतु जो इस भरोसे पर पाप करते है कि पाप कर लो, फिर तीर्थ स्नान से उन पापों को मिटा लेंगे; शास्त्र कहते हैं कि उनके पाप कभी नहीं मिटते। पाप उन्हीं के मिटते है जो किये पापों का सच्चे मन से पश्चाताप कर तीर्थ करने के अनन्तर भविष्य में कभी पाप न करने का प्रण लेते है। ॥इति॥

---

(21) नारद पु. 66/31-33।

(22) महाभारत बन पृ. 84/29।

(23) स्कन्ध पु.प्र. 12-14
गंगेश्वरेति विख्यातं संगरेश्वर-पश्घिमें।9।
तंद्दय्टा तु बरारोहें। गंगा स्नान फल लभेत्।
अश्मेघ सहस्त्रस्यं फलं प्राप्नोति मानवः। स्कन्ध पु.प्र. 12/14।

सप्तऋषि आश्रम में सम्प्रति उपलब्ध सुविधाएं

यह एक ऐतिहासिक स्थान है, जिसका पुनरुत्थान वेदशास्त्रों की काफी खोज के बाद किया गया। इसका संचालन तथा प्रबंध एक ऐसी संस्था के हाथ में है, जो 100 वर्षों से उत्तरी भारत के सनातन धर्मियों का प्रतिनिधित्व करती चली आ रही है। सप्तऋषि आश्रम में जो गंगा तट से ऋषिकेश रोड तक फैला हुआ है, यात्रियों के विश्राम करने तथा भजन-पाठ और कथा-यज्ञ के लिए अच्छी सुविधाएं उपलब्ध हैं।

यहां के कर्मकाण्डी तथा विद्वान पण्डितों द्वारा यज्ञशाला में श्रद्धापूर्वक कराया गया अनुष्ठान तथा गंगेश्वर महादेव के मन्दिर में किया गया शिवार्चन सांसारिक दुखों से निवृत्ति तथा धर्म, अर्थ व मोक्ष की प्राप्ति में सहायक होता है। इस आश्रम में दिया गया दान जनताजनार्दन के हित के कार्यो में जिसका विवरण नीचे दिया गया है, खर्च होता है।

तीर्थ यात्रियों के लिए आवास सुविधा

- आश्रम में पर्याप्त सुविधाओं से युक्त 45 कुटियां यात्रियों के लिए उपलब्ध हैं।
- इन कुटियां में से कुछ में रसोईघर की व्यवस्था भी है।
- यात्री रसोईघर में इस्तेमाल के लिए चूल्हा एवं गैस सिलेण्डर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।
- कुटिया को आरक्षित कराने के लिए यात्री आने से पूर्व स्वागत कक्ष से सम्पर्क करें।

भोजन एवं चाय-नाश्ता

1. आश्रम में शुद्ध शाकाहारी भोजन की व्यवस्था है, जो निम्न समय पर उपलब्ध होगा:-
   - **नाश्ता**- प्रात: 8 से 10 बजे
   - **दोपहर का भोजन**- 12 से 2 बजे
   - **रात्रि भोजन**- 8 बजे से 9 बजे
   - भोजन केवल आश्रम के भोजनालय में उपलब्ध होगा।
2. यात्री नाश्ता एवं भोजन प्राप्त करने के लिए पूर्व सूचना स्वागत कक्ष में दें।

3. नाश्ते एवं दोपहर तथा रात्रि के भोजन के रेट के बारे में कृपया भोजनालय से सम्पर्क करें।

4. 3 वर्ष से कम आयु के बच्चे के नाश्ते और भोजन के लिए कोई शुल्क नहीं देना होगा।

5. चाय, दूध डबल रोटी, बिस्कुट एवं अन्य नाश्ते का सामान एवं भोजन आश्रम की कैंटीन में भी उपलब्ध है।

कैंटीन मो. न. 7217013576

आश्रम आप जैसे दानकर्त्ताओं द्वारा ही चलते हैं। इसलिए आपका सहयोग अपेक्षित है।

अन्नपूर्णा भण्डार

आश्रम में संस्कृत विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ-साथ लगभग 300 साधुओं के प्रतिदिन भोजन की व्यवस्था की जाती है। यात्री इसमें अपना सहयोग दे सकते हैं।

प्रतिदिन भण्डारा भोजन

यात्री इच्छानुसार आश्रम में भण्डारे का आयोजन कर सकते हैं।

1.	दोपहर का भोजन : विद्यार्थी एवं सन्तों के लिए (300 व्यक्तियों के लिए) दाल, रोटी, चावल	5100/-
2.	रात्रि भोजन : दाल / रोटी / सब्जी प्रतिदिन	3100/-
3.	21 ब्राह्मण एक बार का पूड़ी, 2 सब्जी, रायता, फल, खीर या हलवा	3100/-
4.	51 ब्राह्मण एक बार का पूड़ी, 2 सब्जी, रायता, फल, खीर या हलवा	6000/-
5.	100 साधु-सन्तों, विद्यार्थियों, फक्कड़ों का एक बार का भोजन पूड़ी, 2 सब्जी, खीर या हलवा	11000/-
	200 साधु-सन्तों, विद्यार्थियों, फक्कड़ों का एक बार का भोजन पूड़ी, 2 सब्जी, खीर या हलवा	21000/-
	300 साधु-सन्तों, विद्यार्थियों, फक्कड़ों का एक बार का	

भोजन पूड़ी, 2 सब्जी, खीर या हलवा	31000/-

(आईटम बढ़ाने पर धनराशि बढ़ जायेगी) (दक्षिणा दानकर्त्ता द्वारा स्वयं बांटी जाएगी)

प्राकृतिक चिकित्सालय

आश्रम में सभी प्रकार के नये एवं पुराने असाध्य रोगों के उपचार के लिए प्राकृतिक चिकित्सालय की व्यवस्था है जिसका संचालन एक अनुभव डॉक्टर कर रहे हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के लिए अलग-अलग वार्ड उपलब्ध है। योग्य पुरुष एवं महिला स्टाफ का समुचित प्रबन्ध है। इसके लिए आप प्राकृतिक चिकित्सालय के **मो.न. 7217013577** व डॉ॰ वेद प्रकाश जी से सीधे **मो.न. 9416473904, 8307109257** पर सम्र्क कर सकते हैं।

Individual Therapy Rates

1.	Hot Bottle	Rs. 10/-	2.	Mitti Pack	Rs. 50/-
3.	Enema	Rs. 50/-	4.	Whole Body Massage	Rs. 300/-
5.	Steam Bath	Rs. 300/-	6.	Hot & Cold Bath	Rs. 200/-
7.	Mud Bath	Rs. 200/-	8.	Jal Neti	Rs. 80/-

Package Rates

● For 1 day	Rs. 400/-	● For 3 days	Rs. 900/-
● For 7 days	Rs. 2400/-	● For 15 days	Rs. 4800/-

पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान

यह आश्रम पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान के लिए पवित्र स्थान माना जाता है। यहाँ के विद्वान पंडितों द्वारा पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान का उचित प्रबन्ध किया जाता है इसके लिए आश्रम के मुख्य पुजारी व स्वागत कक्ष से सम्पर्क कर सकते हैं।

1. प्रतिदिन रूद्र-अभिषेक
2. महामृत्युंजय जाप
3. ग्रहों की शान्ति के लिए नवग्रह मंत्र जाप
4. देवी पूजन, नवचण्डी, शतचण्डी यज्ञ

8. गोदान-गौमाता का पूजन
9. प्रतिदिन हवन
10. सप्तऋषि पूजन
11. पितरों के निमित्त-तर्पण एवं

पूजन एवं मत्र जाप	पिण्ड दान
5. कालसर्प कुयोग शान्ति पूजन	12. व्रत-उद्यापन
6. मुण्डन एवं यज्ञोपवीत संस्कार	13. मासिक व्रत कथा, अभिषेक एवं यज्ञ
7. ज्योतिष- जन्म कुण्डली एवं फलित	14. लघु रूद्र, महारूद्र आदि पाठ

मन्दिर : प्रभु के दर्शन के लिए आश्रम में बहुत सुन्दर मंदिर हैं।

1. स्वयंभू शिवलिंग युक्त, (श्री गंगेश्वर महादेव)
2. श्री गणेश जी
3. माता दुर्गा
4. श्री राधाकृष्ण
5. माँ सरस्वती
6. श्री संकटमोचन हनुमान
7. श्रीराम दरबार
8. तिरूपतिबाला जी
9. श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के संस्थापक एवं संरक्षक भारतरत्न महामना मदन मोहन मालवीय जी का मन्दिर।

इन सभी मन्दिरों में विधि विधान से पूजा-अर्चना की जाती है। यात्री इनके दर्शन करके पुण्य लाभ अवश्य प्राप्त करें।

यज्ञशाला

भारत के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम डॉ. राजेन्द्र प्रसार जी द्वारा सन् 1954 में 101 वर्षों के लिए अखण्ड अग्नि प्रज्वलित की गयी थी जो आज भी प्रज्वलित है। यहाँ प्रतिदिन यज्ञ किया जाता है।

गौशाला (गौवंश के रक्षा एवं सेवा)

आश्रम की गौशाला में लगभग 100 गायों का पालन पोषण किया जाता है। यात्री गौशाला जाकर गायों की सेवा कर सकते हैं तथा इनके पालन-पोषण के लिए यथा

शक्ति दान दे सकते हैं। गाय का दूध यात्रियों के लिए भी उपलबध है। यात्री इसे मंगवाने के लिए भोजनालय से सम्पर्क करें।

आवासीय संस्कृत महाविद्यालय

संस्कृत भाषा जोकि भारत की सभी भाषाओं की जननी भाषा मानी जाती है, आज विलुप्त हो रही है। इस भाषा के संरक्षण एंव प्रचार के लिए सप्तऋषि आश्रम में आरम्भ से संस्कृत विद्यालय एवं महाविद्यालय स्थापित हैं, जिसमें प्रथमा से आचार्य तक की शिक्षा का प्रावधान है। इस संस्था में संप्रति 300 के लगभग विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इनमें से 100 विद्यार्थियों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था सभा की ओर से की जाती है। यात्री प्रधानाचार्य की अनुमति से इन विद्यार्थियों से बातचीत कर सकते हैं और उन्हें प्रोतसाहन व सुझाव दे सकते हैं और निर्धन छात्रों के लिए छात्रवृत्ति भी दे सकते हैं।

गोस्वामी गणेशदत्त घाट

आश्रम के सामने यात्रियों के गंगा स्नान हेतु सुविधाजनक घाट आश्रम द्वारा संचालित है, जिसमें महिलाओं के लिए वस्त्र परिवर्तन के लिए अलग कक्ष की सुविधा उपलब्ध है। घाट पर पूजा अर्चना हेतु भगवान शिव, श्री लक्ष्मी–नारायण एवं पंचमुखी हनुमान मन्दिर भी स्थापित हैं।

गोस्वामी गणेशदत्त जी महाराज का कीर्ति स्तम्भ एवं समाधि

सप्तऋषि आश्रम के संस्थापक एवं भारतरत्न महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी के एक मात्र शिष्य एवं सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के पुरोधा ब्रह्मलीन त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी का गगनचुंबी कीर्ति स्तम्भ आश्रम में स्थित है। गोस्वमी जी की समाधि गंगाघाट के पास स्थित है। प्रत्येक वर्ष 10 जून को गोस्वामी जी की पुण्यतिथि श्रद्धापूर्वक मनाई जाती है।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा संचालित हरिद्वार की अन्य धर्मशालाएं

महावीर दल धर्मशाला, भोलागिरी रोड, हरिद्वार फोन नं. 7217013578

धर्मशाला में यात्रियों के ठहरने के लिए 23 कमरे उपलब्ध हैं जिनमें से 9 ए.सी. कमरे, 5 कूलर वाले कमरे हैं। यात्रियों के लिए खाने का भी उचित प्रबन्ध है।

श्री गीता भवन भोलागिरी रोड, हरिद्वार

भवन में यात्रियों के लिए 12 सामान्य कमरे उपलब्ध हैं।

कपूरथला हाउस धर्मशाला- हर की पौड़ी, हरिद्वार। फोन नं. 7217013575

यह धर्मशाला हर की पौड़ी पर स्थित है। यहाँ पर यात्रियों के ठहरने के लिए 12 सामान्य कमरे उपलब्ध हैं।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा की सम्बन्धित संस्थाएं

● श्री सनातन धर्म महावीर दल पंजाब (रजि.) ● श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति (रजि.)

आश्रम में ठहरने वाले यात्रियों के लिए आवश्यक सूचना

आश्रम में पधारने पर आपका हार्दिक स्वागत है।

1. कुटिया में कृपया सफाई बनाये रखें।
2. कृपया व्यर्थ में बिजली, पंखा, गीजर, ए.सी. न चलायें।
3. कुटिया में किसी प्रकार की समस्या के लिए स्वागत कक्ष से सम्पर्क करें।
4. आश्रम में जाते समय कुटिया की चाबी एवं सुझाव-पत्र कार्यालय में अवश्य जमा कराएं।
5. भविष्य में भी आश्रम में आते रहें और आने से कुछ दिन पूर्व कुटिया को आरक्षित करने के लिए स्वागत कक्ष से सम्पर्क करें।
6. यह आश्रम व सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के अन्य सभी कार्यक्रम दानकर्त्ताओं के सहयाग से चलते हैं। आप भी कृपया यथा सम्भव दान देकर सभा के कार्यक्रम में सहयोग करें।
7. सप्तऋषि आश्रम, गौशाला एवं प्रतिनिधि सभा की सभी संस्थाओं को दी गई दान राशि 80 जी के नियम के अन्तर्गत आयकर से टैक्स छूट के लिए यात्री पैन नंबर देकर रसीद अवश्य प्राप्त करें।

प्रबन्धक	*स्वागत कक्ष*	*कपूरथला हाऊस धर्मशाला*	*महावीर दल धर्मशाला*
7217013573	7217013571 7217013572	7217013575	7217013578

कुटिया आरक्षित कराने का समय प्रातः 10 बजे से शाम 6 बजे
(कुटिया व्हाट्सएप नं. 7217013571 पर भी आरक्षित करा सकते हैं।)

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब की पूर्ण जानकारी के लिए आप इनकी वेबसाइट www.sdsaptrishi.com पर जा सकते हैं।

डॉ. शिव कुमार स्मृति

सनातन धर्म प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र

सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार

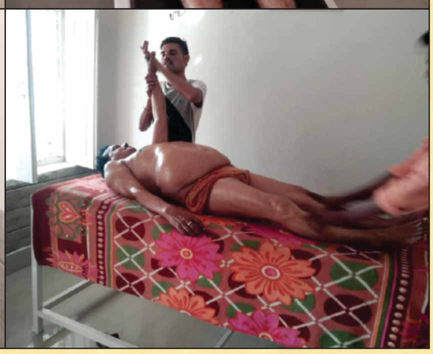

आश्रम स्थित
कुटियाओं का दृश्य

भारत रत्न महामना
पं. मदन मोहन मालवीय
जी मंदिर

अश्रम स्थित मन्दिरों का
एक दृश्य